एकांकी के तत्व बताते हुए उनका विश्लेषण कीजिए।

3. 'अनमोल रतन' कहानी की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

4. 'उत्साह' निबन्ध की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबन्ध में लेखक के विचारों से आप सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

5. 'दीपदान' एकांकी के किसी एक पात्र का चरित्र चित्रण कीजिए। (15)

अथवा

'भोलाराम का जीव' के माध्यम से लेखक ने किन समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) प्रेमचंद युगीन कहानी

(ख) व्यंग्य

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4730 **J**

Unique Paper Code : 2055092001

Name of the Paper : Hindi Gadya Vikas Ke Vividh Charan (A)

Name of the Course : **GE Hindi B.Com Programme**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) दिलफिगार ने पूरब से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक कितने ही जंगलों और वीरानों की खाक छानी, कभी बर्फिस्तानी चोटियों पर सोया, कभी डरावनी घाटियों में भटकता फिरा मगर जिस चीज की धुन थी वह न मिली, यहां तक कि उसका शरीर हड्डियों का एक ढांचा रह गया।

अथवा

"हां, बेटे, मैं तुम लोगों का गनी मियां हूं। चिराग और उसके बीबी-बच्चे तो अब मुझे मिल नहीं सकते, मगर मैंने सोचा कि एक बार मकान की ही सूरत देख लूं।" बुढ्ढे ने टोपी उतारकर सिर पर हाथ फेरा, और अपने आंसुओं को बहने से रोक लिया।

(ख) उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है। किसी भाव के अच्छे या बुरे होने का निश्चय अधिकतर उसकी प्रवृति के शुभ या अशुभ परिणाम के विचार से होता है। वही उत्साह जो कर्त्तव्य कर्मों के प्रति इतना सुन्दर दिखाई पड़ता है, अकर्त्तव्य कर्मों की ओर होने पर वैसा श्लाध्य नहीं होता। आत्म-रक्षा, पर-रक्षा, देश-रक्षा आदि के निमित्त साहस की जो उमंग देखी जांती है उसके सौन्दर्य को पर-पीड़न, डकैती, आदि कर्मों का साहस कभी नहीं पहुंच सकता। यह बात होते हुए भी विशुद्ध उत्साह या साहस की प्रशंसा संसार में थोड़ी बहुत होती है। अत्याचारियों या डाकुओं के शौर्य और साहस की कथाएं भी लोग तारीफ करते हुए सुनते हैं।

अथवा

न मैं किसी गिरजे में जाता हूं न किसी मन्दिर मे, न मैं नमाज पढ़ता हूं और न रोजा ही रखता हूं, न संध्या ही करता हूं और न कोई देव-पूजा ही करता हूं, न किसी आचार्य के नाम का

मुझे पता है और न किसी के आगे मैंने सिर ही झुकाया? है। तो इससे प्रयोजन ही क्या और इससे हानि भी क्या? मैं तो अपनी खेती करता हूं, अपने हल और बैलों को प्रातः काल उठकर प्रणाम करता हूं, मेरा जीवन जंगल के पेड़ों और पत्तियों की संगति में गुजरता है, आकाश के बादलों को देखते मेरा दिन निकल जाता है। मैं किसी को धोखा नहीं देता; हां यदि कोई मुझे धोखा दे तो उससे मेरी कोई हानि नहीं।

(ग) ओह! मां, तुम तो बातें करने में बड़ी अच्छी हो। जब मैं बड़ा होकर बहुत-सी जागीरें जीतूंगा, मां! तो मैं तुम्हारे लिए एक मन्दिर बनवाऊंगा। देवी के स्थान पर तुमको बिठलाऊंगा और तुम्हारी पूजा करूंगा। तुम अपनी पूजा करने दोगी?

अथवा

साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा- "मगर वजन चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुन्दर वीणा है, इसका भी वजन भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना बजाना सीखती है। यह मैं उसे दे दूंगा। साधु संतों की वीणा से तो और अच्छे स्वर निकलते हैं।

2. निबन्ध विधा का सामान्य परिचय दीजिए। (15)

अथवा